

## मेरे सामने वाली खिड़की में-2

“मेरे घर के सामने रहने वाली तीन बहनों में से एक रेवती से मेरा मेलजोल बढ़ने लगा था और मेरी निगाहों की वासना को रेवती समझ रही थी. वो भी तो कामुकता की अग्नि में जल रही थी. ...”

Story By: Saras chandra (apkasaras)

Posted: Tuesday, November 6th, 2018

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [मेरे सामने वाली खिड़की में-2](#)

## मेरे सामने वाली खिड़की में-2

दोस्तो, मैं आपका अपना सरस एक बार अपनी कहानी के अगले भाग के साथ फिर से हाजिर हूँ. मेरे जिन पाठकों और पाठिकाओं ने कहानी का पहला भाग नहीं पढ़ा हो, वो मेरे सामने वाली खिड़की में-1

पर जाकर पढ़ सकते हैं.

मैं उम्मीद करता हूँ कि मेरे सभी पाठक अपना लंड निकाल कर और सभी पाठिकाएं अपनी चूत को पानी छोड़ने की इजाजत देने के साथ ही कहानी का लुत्फ़ उठाने के लिए तैयार होंगी.

कहानी के पहले भाग में आपने पढ़ा था कि कैसे मेरे घर के सामने रहने वाली तीन बहनों में से एक रेवती से मेलजोल बढ़ने लगा था और वो मेरा ख्याल रखने लगी थी.

अब आगे..

अब मैं रेवती पर नजर रखने लगा था. मैं चुपके से देखता था कि वो क्या कर रही है, कब बालकनी में आती है और कब छत पर जाती है. मैं उसकी खिड़की पर भी नजर रखने लगा था. रोज रात को अपनी खिड़की खोल कर रखती और मेरी खिड़की के खुलने का इंतजार करती.

मैंने सोचा क्यों ना जो आग रेवती के सीने में जल रही है, उसे थोड़ा और भड़कने दिया जाए.

कुछ दिन मैंने खिड़की को खोला नहीं और रेवती को नजरंदाज करना शुरू कर दिया. लेकिन मैं रेवती पर अपनी पूरी नजर बनाए हुए था. वो थोड़ा परेशान रहने लगी थी.. लेकिन वो ये

बात मुझे जाहिर नहीं होने देना चाहती थी. वो बहुत ही सुलझी हुई और समझदार लड़की थी.

लेकिन कहते हैं न कि प्यार और दिल पर किसी का जोर नहीं चलता. रेवती अपने दिल के हाथों मजबूर होने लगी थी. एक दिन मेरी छुट्टी वाले दिन रेवती मेरे पास आई और मुझे अपने साथ घर ले गई.

घर जाकर मैंने देखा कि रेवती के घर किसी पूजा का कार्यक्रम चल रहा था. रेवती की मम्मी ने मुझे बिठाया और पूजा में शामिल होने का अनुरोध किया.

मैंने अपनी सहमति प्रदान कर दी.

मैं एक जगह कुर्सी पर बैठा हुआ, घर में चल रही तैयारियों को बड़े गौर से देख रहा था. पूरा घर अच्छे से सजाया गया था.

इतने में रेवती तैयार होकर बाहर आई. रेवती ने नीले रंग के सूट और सफेद सलवार पहन रखी थी. मैं रेवती के बेहतरीन हुस्न को निहारने लगा और अपनी आँखों की प्यास बुझा ही रहा था कि रेवती ने मुझे आवाज लगाई- कहां खो गए सरस.. क्या देख रहे हो ?

मैं सकपका गया और बोला- नहीं कुछ नहीं.

मेरी तरफ देख कर रेवती हंस दी और अपनी मां के पास चली गई.

थोड़ी देर में रेवती अपनी मां के साथ बाहर आई और कहने लगी- मां, मैं सरस को साथ ले जाती हूं, मुझे सुविधा होगी.

रेवती की मां बोलीं- सरस को क्यों परेशान करती हो ? उन्हें बैठने दो.. तुम जाकर आओ.

मैं उठकर उनके पास गया और पूछने लगा कि क्या बात है.. कोई परेशानी हो तो बताइए ?

रेवती की मां बोलीं- नहीं सरस, कुछ पूजा का सामान रह गया है, वहीं लाना है यहीं पास से.. रेवती तुम्हें ले जाने की कह रही है.

मैंने कहा- हां तो कोई परेशानी नहीं है, मैं साथ चला जाऊंगा.

रेवती की मम्मी बोलीं- ठीक है लेकिन जल्दी आना.

रेवती भागते हुए अपनी मां को हां बोलकर अपनी गाड़ी की तरफ ऐसे भागी, जैसे ये पल निकल गया तो शायद हमें दुबारा साथ अकेले जाने का अवसर नहीं मिलेगा. वो झट से गाड़ी को स्टार्ट करते हुए मुझे अन्दर आने का इशारा करने लगी.

मैं गाड़ी के अन्दर आ गया लेकिन मेरी निगाहें अभी भी रेवती पर थीं. वो आज इतनी खूबसूरत लग रही थी कि मन कर रहा था कि उसे पकड़ कर उसके बूब्स और गुलाबी होंठों तक तक चूसता रहूँ, जब तक कि उनका पूरा रस खत्म नहीं हो जाए.

मेरी निगाहों में उतरते हुए कमीनेपन को रेवती समझ रही थी. वो हंसते हुए मुझसे बोली- ऐसे क्या देख रहे हो मुझे आज.. नजरों से ही मेरे बदन को खा जाओगे क्या ?

रेवती के मुँह से बेबाकी से ऐसे शब्द सुनकर मैं झेंप गया और कार की खिड़की से बाहर देखने लगा. यह देख कर रेवती मुस्कुराने लगी.

थोड़ी देर बाद रेवती बोली- बुरा मान गए क्या सरस ?

मैंने कहा- नहीं, बुरा मानने वाली कोई बात नहीं थी. लेकिन आज आप इतनी खूबसूरत लग रही हैं कि एक पुरुष वाली जो भावनाएं एक खूबसूरत लड़की को देखकर जागृत होती हैं न.. वही बस दिल में सर उठाने लगीं. मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझे आपको इस तरह नहीं देखना चाहिए था.

अचानक गाड़ी के ब्रेक लगे और मैं चौंक कर रेवती की तरफ देखने लगा.

रेवती के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान थी और मेरी तरफ गंभीर मुद्रा में देखते हुए रेवती बोली- माफी क्यों मांगते हो सरस. मुझे भी तुम अच्छे लगते हो और मैं भी तुम्हें चाहती

हूं. जो भावनाएं एक पुरुष के मन में एक खूबसूरत महिला को देखकर उत्पन्न होती हैं, कुछ उसी तरह की भावनाएं एक लड़की के दिल में भी उत्पन्न होती हैं. एक अच्छे और सुलझे हुए मर्द को देखकर. मैं भी तुम्हें पसंद करती हूं सरस.. और मैं जानती हूं कि तुम भी मुझे चाहने लगे हो, इसीलिए एक उम्मीद से.. या कहूं कि प्यार से मेरी तरफ देख रहे थे. मुझे भी यह स्वीकार करने में कोई झिझक या संकोच नहीं है कि मैं भी तुमसे प्यार करने लगी हूं. ये जानते हुए भी कि हमारे रिश्ते का कोई अंजाम नहीं होगा.

रेवती बोलती जा रही थी और मैं उसे लगातार एकटक देखता जा रहा था. उसके चेहरे पर हर पल बदलने वाले भावों को समझने की कोशिश कर रहा था. कभी उसके चेहरे पर एक अजीब सी खुशी, एक अजीब सी चमक आ जाती प्यार के नाम से और साथ ही अगले पल हमारे रिश्ते को बेअंजाम पाकर दर्द उभर पड़ता.

उसके चेहरे को पढ़ते हुए मेरे दिल में भी उसके लिए अजीब सा अपनापन महसूस होने लगा और उसकी बातों को सुनते हुए उसकी आँखों में देखते हुए कब मेरा हाथ उसके हाथ को जकड़ गया, ये ना उसे पता लगा और ना ही मुझे.

रेवती ने भी मेरा हाथ पर अपनी मजबूती बनाकर मेरे और अपने रिश्ते को स्वीकृति प्रदान की. रेवती की स्वीकृति पाते ही मेरे होंठ रेवती के होंठ से जा लगे और हम एक दूसरे में खो जाने से मकसद से एक दूसरे में समा जाने के प्रयोजन से होंठों के जरिए कदम बढ़ा चुके थे.

मेरा एक हाथ रेवती के जिस्म के सबसे बेहतरीन भाग उसके मम्मों पर जा टिका और उनका मर्दन करने लगा. रेवती और मैं इस मस्ती मैं खोने लगे थे लेकिन जब मेरा हाथ रेवती की चूत पर जा लगा तो रेवती संभल गई और खुद को मुझसे अलग कर लिया.

रेवती बोली- आज नहीं सरस, आज घर में पूजा है.

मैं रेवती की तरफ देखे जा रहा था और रेवती ने गाड़ी स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी जैसे कुछ

हुआ ही नहीं हो.

हम सामान लेकर घर आ गए. पूजा संपन्न हुई और सभी ने साथ मिलकर खाना खाया. मैं घर जाने के लिए खड़ा हुआ तो रेवती ने अपनी आँखों के इशारे से मुझे मना कर दिया, जैसे वो नहीं चाहती हो कि हम एक पल को भी अलग रहें.

मैं रेवती की आँखों में देख रहा था कि उसकी मां की आवाज ने मेरा ध्यान भंग किया- आज तो छुट्टी है सरस, यहीं आराम कर लो. शाम को भी खाना खाकर चले जाना.

मैं भी रेवती से दूर नहीं जाना चाहता था तो रेवती की मम्मी की बात मान ली और वहीं रुककर आराम करने लगा.

रुक रुक कर बार बार मेरी आँखों के सामने रेवती के साथ बिताए पल आ रहे थे. अब मेरी आँखों में ना तो नींद थी और ना ही चैन.

रेवती बार बार किसी ना किसी काम के बहाने मेरे कमरे में आती तो मैं उसकी तरफ याचना भरी निगाहों से देखता. रेवती की आँखें भी जैसे मुझे आश्वासन देतीं कि 'थोड़ा सब्र करो सरस, तुम्हें सब मिलेगा, मेरा सब कुछ.'

और मैं उसे सहमति प्रदान करता.

दिन ऐसे ही बैचेनी में एक दूसरे को समझने और समझाने में बीत गया. मैं अपने फ्लैट पर वापस आ गया.

दिन गुजरते गए और हम दोनों एक दूसरे को और अधिक बेहतर तरीके से समझते गए. कभी रेवती मेरे फ्लैट पर आ जाती तो कभी मैं रेवती के घर चला जाता.

बीच बीच में कभी अवसर मिलता तो हम चूमाचाटी कर लेते थे लेकिन मन और शरीर की प्यास को बुझाने का अवसर हमें अभी तक नहीं मिला था.

कहानी जारी रहेगी. कहानी का अगला भाग पढ़ना बिल्कुल मत भूलिएगा दोस्तों क्योंकि अगले भाग में मेरे और रेवती के प्यार को अंजाम मिलने वाला है. कैसे रेवती और मैं एक हो गए और कभी ना भूल सकने वाली कहानी रात के काले अंधेरे में प्यार की कलम से एक दूसरे के जिस्म पर लिखते चले गए.

ये सब जानने को मिलेगा आपको कहानी के अगले भाग में... तब तक के लिए आपका सरस आपसे इजाजत चाहता है और आपसे निवेदन करता है कि मुझे अपने सुझाव अवश्य लिखें ताकि मैं बेहतरीन कहानियां आप तक पहुंचा सकूं. यदि आपको मेरी कहानी अच्छी लगती है तो मेरा हौसला बढ़ाने के लिए मुझे जरूर मेल करें और यदि कोई कमी दिखती है तो सुझाव अवश्य दें.

ये सरस आपका अपना है. यदि मैं किसी को खुशियां दे सकूं या किसी के कोई काम आ सकूं तो जरूर बताइए.

apkasaras@gmail.com

कहानी का अगला भाग : [मेरे सामने वाली खिड़की में-3](#)

